संस्कृत-भाषा में रम्य या हृदयावर्जक रचना की समीक्षा की पद्धति को काव्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र, साहित्यशास्त्र या आलोचना शास्त्र कहते हैं। राजशेखर ने इसे शास्त्र की कोटि में रखने का अनुपम प्रयास किया है।

काव्यशास्त्र में उन समस्त विषयों का समावेश होता है जिनका काव्य की रचना में भावात्मक या अभावात्मक योगदान है। इस प्रकार इसमें काव्य के लिए उपादेय (रस, ध्वनि, गुण, रीति, अलंकार) तथा हेय (दोष) विषयों का अनुशीलन होता है। इन्हीं के बल पर हम किसी रचनाकार या उसकी रचना की समीक्षा कर सकते हैं तथा दो लेखकों या कवियों की रचनाओं की तारतम्यता निरूपित कर सकते हैं। यदि काव्यशास्त्रीय व्युत्पत्ति न हो तो सभी कवि एक ही समान लगेंगे। भावुकता में आकर सबको उत्कृष्ट या निकृष्ट ही कह देना अशास्त्रीय घोषणा मात्र है।

काव्यशास्त्र में सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'काव्यप्रकाश' है। इसमें ध्वनिकाव्य, गुणीभूतव्यंग्य तथा चित्रकाव्य के भेदों पर विस्तृत विचार कर मम्मट ने व्यञ्जना को पृथक् वृत्ति के रूप में समझने के लिए पूरा शास्त्रार्थ किया है (उल्लास-5). इसीसे उन्हें 'ध्वनि-प्रतिष्ठापक परमाचार्य' कहा गया है।

विश्वनाथ कविराज संस्कृत-काव्यशास्त्र में सर्वाधिक लोकप्रिय आचार्य हैं, जिनका 'साहित्य-दर्पण' सभी काव्य-प्रेमियों को आकृष्ट करता है। इसमें काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र दोनों समाविष्ट हैं। शब्दशक्ति, रस, काव्य के दो भेद ध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य, चित्रकाव्य का खण्डन, व्यञ्जना की स्थापना आदि की चर्चा की है।

ध्वनि आदि के भेद से काव्य के तीन भेद कहे जाए हैं - काव्यध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य और चित्रभेद।

विश्वनाथ के अनुसार ध्वनिकाव्य का लक्षण इस प्रकार है -

'वाच्यातिशायिनि व्यंग्ये ध्वनिस्तत् काव्यमुत्तमम्'।।।।

अर्थात् वाच्य से अधिक व्यंग्य के अतिशायी होने पर वह

ध्वनि' तथा 'उत्तम काव्य' कहा जाता है।"

अर्थात जिस काव्य में व्यञ्जना से आने वाला या प्रकट होनेवाला अर्थ (व्यंग्यार्थ), अभिधा से प्राप्त अर्थ से अधिक चमत्कारी होता है, वह ध्वनि काव्य कहलाता है, उसी को उत्तम काव्य भी कहते हैं।

ध्वनि काव्य के दो भेद -

भेदौ ध्वनेरपि द्वावुदीरितौ लक्षणाभिधामूलौ।
अविवक्षित वाच्यो विवक्षितान्यपरवाच्यश्च ॥2॥
(विश्वनाथ)

ध्वनिकाव्य के दो भेद लक्षणामूला और अभिधामूला अर्था अर्थात क्रमशः अविवक्षित वाच्य तथा विवक्षितान्यपर वाच्य - नामक दो भेद हैं।

अविवक्षितवाच्य का अर्थ है जहाँ वाच्य विवक्षित न हो अर्थात वाच्य जहाँ पर बाधित स्वरूप वाला हो। यह लक्षणामूला ध्वनि है। क्योंकि लक्षणामूलक होने के कारण ही इसमें वाच्यार्थ की विवक्षा नहीं होती अर्थात वाच्यार्थ की प्रधानता नहीं रहती।

अविवक्षित वाच्य के दो भेद हैं - (1) अर्थान्तरसंक्रमित-वाच्य और (2) अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य, जैसा कि विश्वनाथ ने कहा है - 'अर्थान्तरं सङ्क्रमिते वाच्येऽत्यन्तं तिरस्कृते।
अविवक्षित वाच्योऽपि ध्वनिर्द्वैविध्यमृच्छति ॥3॥

अर्थात वाच्य के अर्थान्तर में संक्रमित होने पर 'अर्थान्तर-संक्रमित वाच्य और वाच्य के अत्यन्त तिरस्कृत होने पर अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य कहलाते हैं।

Contd.

Uma Pandit
Deptt of Skt
III yr. Content.